कोने-कोने से...

मुख्य चुनाव निरीक्षक विजय भाकरे ने चंद्रपुर मनपा में की समीक्षा

चंद्रपुर। चंद्रपुर महानगरपालिका की सार्वत्रिक चुनाव 2025–26 की पृष्ठभूमि में मुख्य चुनाव निरीक्षक विजय भाकरे ने आज चंद्रपुर महानगरपालिका में सभी संबंधित विभागों की तैयारियों की सविस्तार समीक्षा की।

महानगरपालिका स्थायी समिति सभागृह में आयोजित इस बैठक में चुनाव की तैयारियों, नियोजन और क्रियान्वयन को लेकर विस्तृत चर्चा की गई। बैठक में चुनाव अधिकारी एवं मनपा आयुक्त अकुनुरी नरेश (भा.प्र.से.), सभी निर्वाचन निर्णय अधिकारी, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ईश्वर कातकाडे, अतिरिक्त आयुक्त चंदन पाटील, उपायुक्त संदीप चिद्रावार, प्रादेशिक परिवहन अधिकारी किरण मोरे, पुलिस विभाग के वरिष्ठ अधिकारी तथा विभिन्न विभागों के प्रमुख उपस्थित थे। मनपा आयुक्त अकुनुरी नरेश ने अब तक किए गए चुनाव संबंधी कार्यों की विस्तृत जानकारी पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से प्रस्तुत की। इसके पश्चात मुख्य चुनाव निरीक्षक विजय भाकरे ने प्रत्येक विभाग की सूक्ष्म समीक्षा करते हुए सभी यंत्रणाओं को आपसी समन्वय से कार्य करने के स्पष्ट निर्देश दिए।

'कोयता गैंग' का करेंगे सफाया : अजित पवार

पुणे। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने दावा किया है कि पुणे को केंद्र और राज्य से भारी वित्तीय सहायता प्राप्त हुई, लेकिन स्थानीय नेता इसका इस्तेमाल शहर के सार्थक विकास के लिए करने में विफल रहे। पवार

ने पुणे नगर निगम (पीएमसी) के चुनावों से पहले बनेर क्षेत्र में एक रैली में कहा कि इस ''विफलता'' ने शहर के नेतृत्व में बदलाव की आवश्यकता को रेखांकित किया है। अजित पवार की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा), भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की शिवसेना राज्य में महायुति गठबंधन का हिस्सा हैं, लेकिन पीएमसी समेत 29 नगर निगमों में अलग–अलग चुनाव लड़ रहे हैं। पानी की आपूर्ति की कमी, कूड़े का ढेर, सड़कों पर गड्ढे, भारी यातायात और शहर में "बिगड़ती" कानून–व्यवस्था की स्थिति जैसे मुद्दों का जिक्र करते हुए पवार ने कहा कि इन समस्याओं को हल करने के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी है। उन्होंने कहा, "हम 'कोयता' (दरांती) गैंग को खत्म करना चाहते हैं और शहर में कानून–व्यवस्था बनाए रखना चाहते हैं।"

शिवसेना उबाठा की चुनाव प्रचार समिति गठित

अमरावती। अमरावती महापालिका चुनाव 2026 के लिए शिवसेना (उबाठा) ने अपनी चुनावी तैयारियों को धार देते हुए एक विशेष 'प्रचार समन्वय समिति' की घोषणा की है, जिसकी कमान अनुभवी नेता नितिन तारेकर को सौंपी गई है। यह समिति जिले के वरिष्ठ शिवसेना नेताओं के साथ समन्वय स्थापित कर उम्मीदवारों के लिए प्रचार सभाओं, नुक्कड़ बैठकों (वाडी बैठक) और भव्य प्रचार रैलियों के सफल आयोजन की जिम्मेदारी संभालेगी। समिति में अशोक इसल, रघुनाथ विजयकर, अशोक तायडे और अलका अंबडकर सहित 22 प्रमुख सदस्यों को शामिल किया गया है, जबकि पार्टी के सभी वर्तमान पदाधिकारी इसके पदसिद्ध सदस्य के रूप में कार्य करेंगे।

क्या बोलती पब्लिक

दुर्गम पहाड़ी आदिवासी क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र होने चाहिए। बीमार मरीजों को अस्पताल तक पहुँचाने के लिए पक्की सड़कों तथा समुचित वाहन व्यवस्था की सुविधा उपलब्ध होनी चाहिए।

–भागचंद्र तात्याब जाधव, कांदिवली पूर्व

मतदाता चाहते हैं कि जनप्रतिनिधि चुनावी वादों तक सीमित न रहें, बल्कि जमीनी समस्याओं का समाधान करें। बेहतर सड़कें, स्वच्छ पानी, स्वास्थ्य और शिक्षा की सुविधाएँ प्राथमिकता हों।

–निधि गुप्ता, डोंबिवली

हमें भेजें

अगर आप भी अपने विचार हमें भेजना चाहते हैं तो 8356804318 इस नंबर पर व्हाट्सप्प करें।

विश्लेषण

बीएमसी में 'महिलाराज'

डीबीडी संवाददाता । मुंबई

मुंबई महानगरपालिका में महिला वोटरों की भूमिका कितनी अहम रही है इसका अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि यहां मतदान करने में महिलाओं का प्रतिशत पुरुषों की तुलना में हमेशा बेहतर रहा है। यानी पुरुष वोटरों की अपेक्षा महिलाएं बढ़-चढ़कर मतदान में भाग लेती रही हैं। यही कारण है कि महिला वोटरों को साधने के लिए पार्टियों ने एक से बढ़कर एक वादे भी किए हैं। लेकिन सवाल यहां ये है कि वादों से इतर क्या इन्हीं पार्टियों ने प्रभुत्व और संख्या के अनुरूप महिलाओं को टिकट दिए हैं? चुनावी राजनीति में उन्हें वो हिस्सेदारी दी है, जिसकी वो हक़दार हैं? जवाब 'हां' है। इस बार चुनावी फिजा बदली हुई है। अब महिलाएँ केवल आरक्षित वार्डों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि उन्होंने खुले वार्डों में भी अपनी पैठ बना ली है। 'लाडली बहनों' को राजनीतिक मुख्यधारा में लाने की नई नीति के तहत भाजपा, शिवसेना (यूबीटी), शिवसेना (शिंदे गुट) और कांग्रेस जैसे सभी प्रमुख दलों ने महिलाओं पर भरोसा जताया है। इस बार के चुनाव में रणरागिणी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चुनावी दंगल में उतरी हैं।

- चुनावी मैदान में 879 महिलाएं
- सभी दलों ने महिलाओं पर जताया भरोसा
- बीजेपी ने पुरुषों से ज्यादा महिलाओं पर लगाया दांव

चुनावी समीकरण : आधे से ज्यादा सीटों पर महिला शक्ति

मुंबई की कुल 227 नगरसेवक सीटों के लिए इस बार कुल 1,729 उम्मीदवार अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। चौंकाने वाली बात यह है कि इनमें से 879 उम्मीदवार महिलाएँ हैं, जो कुल संख्या का 51.70% है। इनमें से 418 महिलाएँ मुख्य मुकाबले में सीधी टक्कर दे रही हैं। विशेष रूप से मुस्लिम बहुल और अल्पसंख्यक क्षेत्रों जैसे देवनार, मानखुर्द, चेंबूर और गोवंडी में महिला उम्मीदवारों की सक्रियता सबसे अधिक है, जहाँ अकेले इन क्षेत्रों से 68 महिलाएँ चुनावी मैदान में हैं।

आरक्षण का गणित और महिलाओं का वर्चस्व

बीएमसी के कुल 227 वार्डों में से 114 वार्ड महिलाओं के लिए आरक्षित किए गए हैं। आरक्षण के विस्तृत विवरण के अनुसार, अनुसूचित जाति (SC) के लिए आरक्षित 15 वार्डों में से 8 वार्ड महिलाओं के लिए हैं। अनुसूचित जनजाति (ST) के 2 आरक्षित वार्डों में से एक महिला के लिए है। वहीं, ओबीसी (OBC) के लिए आरक्षित 61 वार्डों में से 31 पर महिलाएँ चुनाव लड़ रही हैं। इसी तरह, सामान्य श्रेणी के 61 आरक्षित वार्डों में भी 31 सीटों पर महिलाओं की दावेदारी तय है।

महिला उम्मीदवारों की संख्या

देवनार, मानखुर्द, चेंबूर और गोवंडी में सबसे अधिक 68 महिला उम्मीदवार हैं, इसके बाद वडाला, दादर के कुछ हिस्से और सायन में 66 महिला उम्मीदवार हैं। धारावी, माहिम और दादर के कुछ हिस्सों में 50, अंधेरी पूर्व में 56 और घाटकोपर में 51 महिला उम्मीदवार मैदान में हैं। वहीं, भायखला, चिंचपोकली और रे रोड में 50, अंधेरी पश्चिम और भांडुप में 46–46, मलाड में 42, मुलुंड में 37 और वर्ली व प्रभादेवी क्षेत्र में 34 महिला उम्मीदवार चुनावी प्रतिस्पर्धा में शामिल हैं।

हाई-प्रोफाइल मुकाबला

- वार्ड क्रमांक 209 में शिंदे सेना की यामिनी जाधव का सामना मनसे की हसीना माहिमकर से होगा।
- वार्ड 191 में ठाकरे गुट की पूर्व महापौर विशाखा राउत और शिंदे गुट की नई उम्मीदवार प्रिया सरवणकर के बीच कड़ी टक्कर है।
- वार्ड 203 में श्रद्धा पेडणेकर (ठाकरे गुट) और समिधा भालेकर (शिंदे गुट) आमने–सामने हैं।
- वार्ड 199 में पूर्व महापौर किशोरी पेडणेकर के खिलाफ शिंदे गुट ने रुपाली कुसुंबे को मैदान में उतारा है।
- वार्ड क्रमांक 2 में शिवसेना ठाकरे गुट की धनश्री कोलगे के सामने तेजस्वी घोसाळकर चुनौती पेश कर रही हैं।

बीजेपी और एनसीपी का 'महिला कार्ड'

बृहन्मुंबई महानगरपालिका चुनावों में इस बार भारतीय जनता पार्टी और एनसीपी एक नई और आक्रामक रणनीति के साथ मैदान में उतरी है। पार्टी द्वारा जारी उम्मीदवारों की सूची ने राजनीतिक गलियारों में हलचल मचा दी है, क्योंकि इसमें पुरुषों की तुलना में महिलाओं को अधिक प्राथमिकता दी गई है। बीजेपी ने कुल 76 महिला उम्मीदवारों को टिकट दिया है, जबकि पुरुष उम्मीदवारों की संख्या 61 है। एनसीपी ने अपने 94 उम्मीदवारों में से 52 महिलाओं को चुनावी मैदान में उतारा है। इसे मुंबई के नागरिक निकाय चुनावों के इतिहास में बीजेपी और एनसीपी की ओर से महिलाओं का अब तक का सबसे बड़ा प्रतिनिधित्व माना जा रहा है। बीजेपी ने तो ओबीसी या एसटी श्रेणियों में न आने के बावजूद, कई सक्षम महिला कार्यकर्ताओं को सामान्य सीटों से उम्मीदवार बनाया है। गोरेगांव के वार्ड नंबर 57 (ओपन सीट) से पूर्व नगरसेविका श्रीकला पिल्ले को दोबारा मौका दिया गया है, जिनके परिवार का इस क्षेत्र में लंबा राजनीतिक इतिहास रहा है। इसी तरह कांदिवली (वार्ड 55) से मराठी अभिनेत्री निशा परूलेकर, खार (वार्ड 98) से पूर्व उपमहापौर अलका केरकर और फोर्ट–कोलाबा (वार्ड 225) से हर्षिता नरवेकर को ओपन सीटों से टिकट दिया गया है।

अब बात महिला मतदाताओं की

बीएमसी के 114 वार्ड महिलाओं के लिए भले ही आरक्षित किए गए हैं लेकिन इस चुनावी शोर के बीच शहर का सबसे महत्वपूर्ण 'वोटर ग्रुप' यानी महिलाएं अब भी चर्चा से बाहर हैं। 'Ascendia Strategies' के नवीनतम सर्वे के अनुसार, मुंबई की महिलाएं राजनीतिक रूप से जागरूक तो हैं, लेकिन स्थानीय प्रशासन और कॉर्पोरेटर्स से उनका जुड़ाव काफी कमजोर बना हुआ है। सर्वे के चौंकाने वाले आंकड़ों के अनुसार, केवल 44 फीसदी महिलाओं को अपने इलाके के कॉर्पोरेटर का नाम पता है। यह आंकड़ा मराठी मानुष (68%) और मुस्लिम वोटरों (60%) की तुलना में काफी कम है। विशेषज्ञों का मानना है कि यह महिलाओं की राजनीति में अरुचि नहीं, बल्कि राजनीतिक दलों द्वारा उन तक सही तरीके से न पहुंच पाने का परिणाम है। करीब 57 फीसदी महिलाओं ने स्वीकार किया कि उन्होंने अपनी समस्याओं के लिए कभी स्थानीय प्रतिनिधि से संपर्क ही नहीं किया।

वोट देने में पूरी तरह आत्मनिर्भर हैं महिलाएं

भले ही स्थानीय नेताओं से जुड़ाव कम हो, लेकिन मतदान के फैसले में मुंबई की महिलाएं पूरी तरह स्वतंत्र हैं। सर्वे के अनुसार, 65 फीसदी महिलाएं अपना वोट खुद तय करती हैं, जबकि केवल 11 फीसदी के फैसले पर परिवार (पति या पिता) का असर होता है। यह डेटा उन पुरानी धारणाओं को तोड़ता है जिनमें माना जाता था कि महिलाएं परिवार के मुखिया के कहने पर वोट देती हैं। हालांकि, अपनी आवाज उठाने के बावजूद केवल 23 फीसदी महिलाएं ही अपनी समस्याओं का समाधान करवा पाई हैं।

पार्टी चिन्ह नहीं, 'काम' है सबसे बड़ा फैक्टर

महिला वोटरों की प्राथमिकताएं बहुत स्पष्ट हैं। जब बात वोट देने के आधार की आती है, तो 45 फीसदी महिलाओं के लिए उम्मीदवार का 'कामकाज' सबसे बड़ा पैमाना है। उनके लिए पार्टी का चुनाव चिन्ह, जाति, धर्म या बड़े राष्ट्रीय नेताओं की छवि गौण है। यह रुझान संकेत देता है कि मुंबई नगर निगम चुनाव असल में जमीनी प्रदर्शन के आधार पर तय होते हैं, न कि केवल राजनीतिक नारों के शोर पर।

सुरक्षा और सुविधाएं : क्या चाहती हैं मुंबई की महिलाएं?

सुरक्षा के मुद्दे पर महिलाओं की मांगें बहुत व्यावहारिक हैं। सर्वे के अनुसार, 26 फीसदी महिलाएं सार्वजनिक स्थानों पर CCTV कैमरे चाहती हैं, जबकि 23 फीसदी ने महिला हेल्पलाइन और पैनिक बटन को प्राथमिकता दी है। दिलचस्प बात यह है कि पारंपरिक वादों में शामिल 'स्ट्रीट लाइटिंग' को केवल 1 फीसदी महिलाओं ने जरूरी माना। इसके अलावा, नागरिक मुद्दों में गड्ढे, जलभराव (24%) और खराब सफाई (18%) उनकी सबसे बड़ी चिंताएं बनी हुई हैं।

वार्ड 1 | वोट संख्या : 33178

मुकाबला त्रिकोणीय होने की संभावना

रेखा यादव | फोरम परमार | शीतल अशोक म्हात्रे

आगामी बीएमसी चुनाव 2026 के लिए वार्ड नंबर 1 में मुकाबला त्रिकोणीय होने की संभावना है। महायुति गठबंधन की ओर से शिवसेना (एकनाथ शिंदे गुट) ने रेखा यादव को मैदान में उतारा है, जो स्थानीय स्तर पर सक्रिय चेहरा मानी जाती हैं। वहीं, महा विकास अघाड़ी (MVA) की ओर से शिवसेना (UBT) ने फोरम परमार को उम्मीदवार बनाया है। इनके अलावा, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने शीतल म्हात्रे को अपना प्रत्याशी घोषित किया है। शीतल म्हात्रे पहले भी इस क्षेत्र से पार्षद रह चुकी हैं और उनकी स्थानीय राजनीति पर अच्छी पकड़ मानी जाती है। इन प्रमुख चेहरों के बीच मुकाबला काफी दिलचस्प होने की उम्मीद है क्योंकि यह वार्ड दहिसर पश्चिम के भाषाई और सांस्कृतिक रूप से विविध मतदाताओं का प्रतिनिधित्व करता है।

वार्ड की पृष्ठभूमि और चुनावी इतिहास

दहिसर पश्चिम का वार्ड नंबर 1 ऐतिहासिक रूप से राजनीतिक उठापटक का केंद्र रहा है। साल 2017 के नगर निगम चुनावों में इस वार्ड से तेजस्वी अभिषेक घोसालकर ने जीत दर्ज की थी। वर्तमान में यह वार्ड दहिसर विधानसभा क्षेत्र का हिस्सा है, जहाँ से भाजपा की मनीषा चौधरी विधायक हैं। चुनाव आयोग के आंकड़ों और हालिया सर्वे के अनुसार, इस वार्ड के मतदाता वायु गुणवत्ता (AQI), सड़कों के बुनियादी ढांचे और पार्कों जैसी नागरिक सुविधाओं को प्राथमिकता दे रहे हैं।

वार्ड 2 | वोट संख्या : 40554

घोसालकर के सामने कोलगे की चुनौती

तेजस्वी घोसालकर | धनश्री कोलगे

वार्ड संख्या 2 (दहिसर) में चुनावी मुकाबला हाईप्रोफाइल हो गया है। यहां से बीजेपी ने उद्धव ठाकरे की पार्टी छोड़कर आईं तेजस्वी घोसालकर को चुनाव मैदान में उतारा है। तेजस्वी के पाला बदलने पर उद्धव ठाकरे ने इस वार्ड में धनश्री कोलगे को मैदान में उतारा है। इसके अलावा, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने मेनका गिरीश सिंह को अपना अधिकृत उम्मीदवार बनाया है। तेजस्वी को जिताने के लिए बीजेपी ने पूरी ताकत झोंक दी है। बीजेपी में शामिल होने के बाद तेजस्वी घोसालकर मुख्यमंत्री फडणवीस से लेकर केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल तक मिल चुकी हैं, लेकिन उनके ससुर विनोद घोषालकर शिवसेना यूबीटी की कैंडिडेट धनश्री कोलगे का प्रचार कर रहे हैं। घोसालकर इस क्षेत्र से विधायक रह चुके हैं।

वार्ड की प्रोफाइल और महत्वपूर्ण मुद्दे

दहिसर पश्चिम का वार्ड नंबर 2 (सामान्य श्रेणी) 'आर–उत्तर' प्रशासनिक वार्ड के अंतर्गत आता है। ऐतिहासिक रूप से यहाँ भाजपा का दबदबा रहा है और जगदीश ओझा (भाजपा) यहाँ के पिछले निर्वाचित पार्षद रहे हैं। इस वार्ड की कुल जनसंख्या लगभग 56,000 है, जहाँ बुनियादी सुविधाओं जैसे कि सड़कों का रखरखाव, ड्रेनेज सिस्टम और स्थानीय पार्कों की सुरक्षा प्रमुख चुनावी मुद्दे बने हुए हैं। बीएमसी के वार्ड संख्या 2 में भले ही चुनावी मुकाबला तेजस्वी घोसालकर और धनश्री कोलगे के बीच है।

वार्ड 3 | वोट संख्या : 45800

चौकोणीय मुकाबले की संभावना

प्रकाश दरेकर | रोशनी गायकवाड़

महायुति की ओर से भारतीय जनता पार्टी (BJP) ने भाजपा विधायक प्रवीण दरेकर के भाई प्रकाश दरेकर को उम्मीदवार बनाया है, जो इस क्षेत्र के एक अनुभवी और प्रभावशाली नेता माने जाते हैं। उनके सामने महा विकास अघाड़ी (MVA) की ओर से शिवसेना (UBT) ने रोशनी गायकवाड़ को मैदान में उतारा है। इसके अतिरिक्त, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की तरफ से प्रदीप चौबे अपनी दावेदारी पेश कर रहे हैं। राष्ट्रवादी कांग्रेस ने मनीष दुबे को मैदान में उतारा है। इन प्रमुख प्रत्याशियों के बीच होने वाला यह त्रिकोणीय मुकाबला वार्ड की दिशा तय करेगा।

वार्ड की पृष्ठभूमि और चुनौतियाँ

दहिसर पश्चिम का वार्ड नंबर 3 'आर–उत्तर' वार्ड के तहत आता है और यह सामान्य श्रेणी (General) के लिए आरक्षित है। 2017 के बीएमसी चुनाव में यहाँ से शिवसेना के बालकृष्ण जयसिंग ब्रीड ने जीत हासिल की थी, लेकिन शिवसेना में हुए विभाजन के बाद राजनीतिक समीकरण पूरी तरह बदल चुके हैं। इस वार्ड में केतकीपाड़ा, धारखाड़ी और दहिसर चेक नाका जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र शामिल हैं। यहाँ के स्थानीय मतदाता मुख्य रूप से सड़कों के चौड़ीकरण, कचरा प्रबंधन और सार्वजनिक पार्कों के रखरखाव जैसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।